रायगड-महाराष्ट्र

कडी धूप में चलते चलते हम महाराष्ट्र के रायगड जिला के एक गाँव में पहुंचे. दोपहर के तीन बजे होंगे. यहा के सभी घर मिट्टी और घास से बने थे. इस वाडी के एक घर में हम पहुंचे. घर के बाहर दो-तीन लडकीयां बातचीत कर रहि थी. हमने एक लडकी को पूछा कि घर में कोई 14-18 साल का युवक/युवती है? तो उसने बताया कि वो खुद ही 14 साल कि है. और घर में कोई और 14-18 साल का नही है. उससे बात करने के बाद पता चला कि वो खुद स्कूल छोड चुकी है. और वह घर के काम ही करती है. उससे काफी बातचीत करने पर पता चला कि उसकी एक सोलह साल कि बहन है पर वो उसके बारे में बात करने मी हीचकीचा रही थी. हमने उसको बोला कि हमे उसकी बहन से बात करनी है.

उसकी बहन का नाम कविता था. कविता अंदर थी और वो बाहर आने के लिये शर्मा रही थी. बहोत बार बोलने

पर वो बाहर आयी. उसके हात में एक छोटा बच्चा भी था. हमने उससे बात करनी शुरू की. उसकी शादी हो गयी थी और वो अपने मां के घर में रह रही थी. वो बच्चा भी उसीका था. उसने बताया कि 9-10 महिने पहिले हि उसकी शादी हुई थी. उसका पती भी उसके साथ उसके मायके में रहता था. पर अभी वो उसको छोड के चला गया है. कविता को पूछा कि पती ने उसको क्यो छोडा तो उसने बताया की वो जो भी कमाता था वो सब अपने माता-पिता को देता था. कविता और उसके बच्चे के लिये कुछ भी पैसे खर्च नही करता था. एक दिन कविता ने पती से बच्चे के दवाई के लिये पैसे मांगे तो उसके पती ने कविता के मां के सामने उसे मारना शुरू किया. यह सब देख कर कविता के मां ने बीच में आने कि कोशिश कि लेकीन वह नही मान रहा था. यह देख कविता के मां ने उसके पती की पिटाई की. इसलिये घुस्सा होकर उसका पती उसको छोड कर चला गया. अब वो उससे तलाक लेना चाहता है. कविता के आंखो में अपने पती के लिये घुस्सा दिख रहा था. कम उम्र में शादी कर के वह बहुत पचता रही थी. वह पोलीस में शिकायत भी नही कर सकती थी क्योंकी उसकी उम्र भी कम थी. पर वो मेहनत कर के अपने बच्चे को पढाना चाहती है.

उसको हम लोगोने पूछा की क्या आप अभी पढाई करना चाहोगे? उसपर उसने कहा की पढाई न कर उसने बडी गलती कि है. आज अगर मैने पढाई कि होती तो मै किसी पर बोझ नही बनती. लेकीन वह शिलाई का काम सिखना चाहती है. जीससे वह पैसा कामाकर अपने बेटे को बहोत पढाना चाहती है. जो दिन वह देख रही है वह दिन अपने बेटे को नही दिखाना चाहती है.

कविता जैसी कहानी कातकर वाडी के लगभग सभी युवओंकी थी. लगभग सभी युवा स्कूल छोड चुके है. कईओं की तो शादी भी होगयी है और उनको 1-2 बच्चे भी है. सभी लडके मजदुरी करने जाते है और लडकीयां घर के काम करती है. किसी को भी आगे पढने कि इच्छा नही थी. उनसे बात चीत करने पर पता चला कि उनको अपने बच्चो को अच्छी शिक्षा देनी कि ख्वाईश है. लेकीन शिक्षा का अधीकार होने के बावजुद इस बस्ती के 6 से 14 आयु वर्ग के लगबघ सभी बच्चे स्कूल से बाहर है